टिड्डियों का आतंक

कैथरीन ए. वेल्च

चित्र: लॉरी जॉनसन

टिड्डियों का आतंक

हेल्गा और एरिक को अपनी आँखों पर विश्वास नहीं हुआ. बिना किसी चेतावनी के, अजीब, चमकदार बादल आकाश से नीचे आ गया. हर जगह टिड्डे थे, और वे फसल खा रहे थे!

1870 के दशक में, जब मिनेसोटा और अन्य मध्य-पश्चिमी राज्यों में टिड्डियों ने जब फसल को नष्ट कर दिया, तो कई परिवारों ने हार मान ली और उस इलाके को छोड़कर चले गए. यह कहानी दो स्वीडिश अप्रवासी बच्चों के बारे में है जिन्होंने अपने माता-पिता की अपना घर बचाने में मदद की.
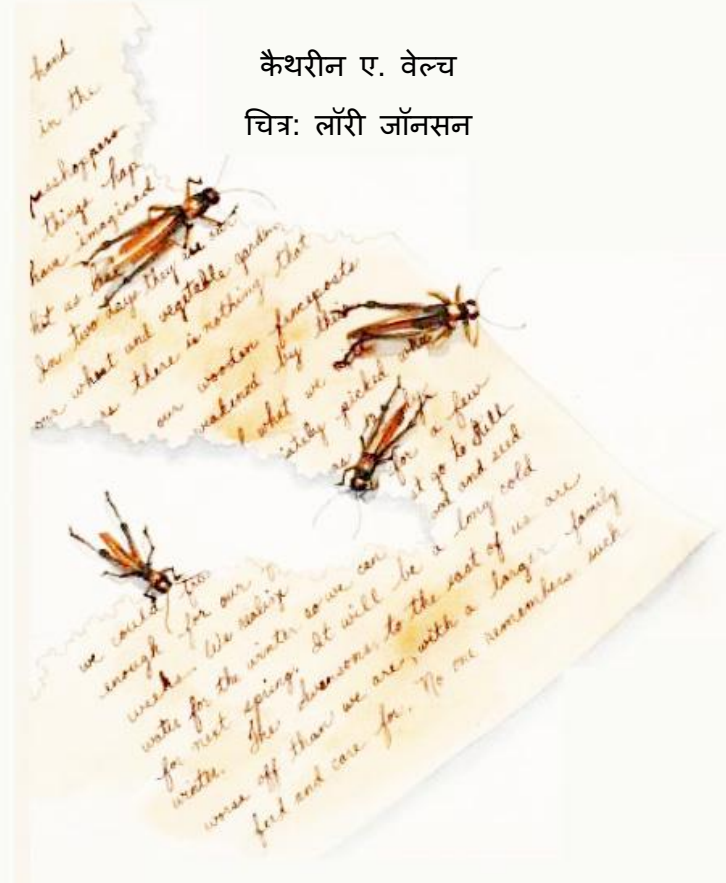
कैथरीन ए. वेल्च

चित्र: लॉरी जॉनसन

हेल्गा ने आकाश की ओर देखा.

"लगता है हमारी तरफ कुछ आ रहा है," उसने कहा.
"बेहतर होगा कि हम घर चलें."

एरिक ने जल्दी से अपनी मछली पकड़ने की बंसी को पानी में से खींच लिया.

वो केवल सात साल का था और हेल्गा से दो साल छोटा था.

लेकिन वो उस इलाके को जानता था.

वहां की जमीन समतल थी.

वहां पर अचानक हिंसक तूफान आ जाते थे.

"मैंने इस तरह का आकाश पहले कभी नहीं देखा है," एरिक ने कहा.

"उन बादलों में कुछ चमक रहा है."

"मुझे वो अच्छा नहीं लग रह है," हेल्गा ने कहा.

"आशा है कि पिताजी शहर से वापस आ गए होंगे. लगता है एक भयानक तूफान आने वाला है."

हेल्गा और एरिक आगे चले.

अब सफेद बादल धुएँ के रंग की तरह काले हो गए और करीब आ गए.

"यह क्या शोर हो रहा है?" एरिक ने पूछा.

हेल्गा ने भी वो आवाज़ सुनी.

उसने एक अजीब सी गहरी गुनगुनाहट सुनी.

"जल्दी करो," हेल्गा ने कहा. "वो एक बवंडर भी हो सकता है."

जैसे-जैसे वे तेजी से आगे बढ़े, आसमान में अंधेरा छा गया.

मिनटों में दिन, रात में बदल गया, और उन्हें ऊपर से एक भिनभिनाहट की, एक आरी जैसी आवाज आई.

तभी अचानक बादल नीचे गिर पड़ा.

उनके चेहरे और हाथों से टकराती हुई ओले जैसी चीज़ें ज़मीन पर गिरीं.

"दौड़ो!" हेल्गा चिल्लाई. "दौड़ो!!"

एक काले झुंड ने उन्हें घेर लिया.

उसके शोर से उनके कान के पर्दे फटने लगे.

भूरे रंग के छोटे-छोटे खुरदुरे टिड्डे उनके बालों में और उनके कपड़ों में फुदकने लगे.

हेल्गा और एरिक ने अपने कपड़ों से टिड्डों को हटाया और वे मैदान में दौड़ने लगे.

कुछ मिनट बाद आसमान में बादल गायब हो गए.

सूरज चमक उठा और तेज गर्मी हो गई.

हेल्गा और एरिक ने दौड़ना बंद कर दिया.

उन्हें अपनी आंखों पर विश्वास नहीं हो रहा था.

उनके पैर, टिड्डियों के एक समुद्र में टखनों तक डूब गए थे!

टिड्डे हर जगह थे.

कुछ उड़ रहे थे.

कुछ उछल रहे थे.

मक्का के खेत में एक कर्कश हंगामा था!

"देखो," हेल्गा ने कहा.

"सभी पौधों की डंठलें जमीन पर झुक गई हैं."

"टिड्डियाँ, सभी मक्का खा रही हैं!" एरिक चिल्लाया.

तभी उन्हें दूर से एक आवाज सुनाई दी.

"माँ को मदद की ज़रूरत है," हेल्गा चिल्लाई.

"चलो माँ के पास चलते हैं."

हेल्गा आगे बढ़ी.

एरिक उसके पीछे-पीछे दौड़ा.

वे मक्का के खेत में से होकर दौड़े.

वे टिड्डियाँ को अपने नंगे पैरों से कुचलते हुए दौड़े.

जल्द ही वे अपनी माँ को देख सकते थे.

वो दो थालियों को आपस में पीटकर ज़ोर-ज़ोर से बजा रही थीं.

"वो इस आवाज़ से भी नहीं डरते," मिसेज़ लुंडस्ट्रॉम चिल्लाईं.

"बगीचे को बचाने में मेरी मदद को."

मिसेज़ लुंडस्ट्रॉम ने अपने बच्चों को कुछ चादरें और कंबल दिए.

हेल्गा ने कुछ टमाटर के पौधों से टिड्डों को हिलाया और जल्दी से उन्हें चादर से ढक दिया.

लेकिन कुछ सेकंड बाद, टिड्डे चादर के नीचे से अंदर घुस गए.

"चादर से कोई फायदा नहीं हुआ," हेल्गा ने कहा. "टिड्डे चादर के नीचे से घुस गए हैं."

"और आपने मुझे जो हरा कंबल दिया था टिड्डे उसे खा रहे हैं," एरिक ने कहा.

"अच्छा फिर जितनी सब्जियां हो सकें उतनी सब्जियां तोड़कर लाओ," मिसेज़ लुंडस्ट्रॉम चिल्लाईं.
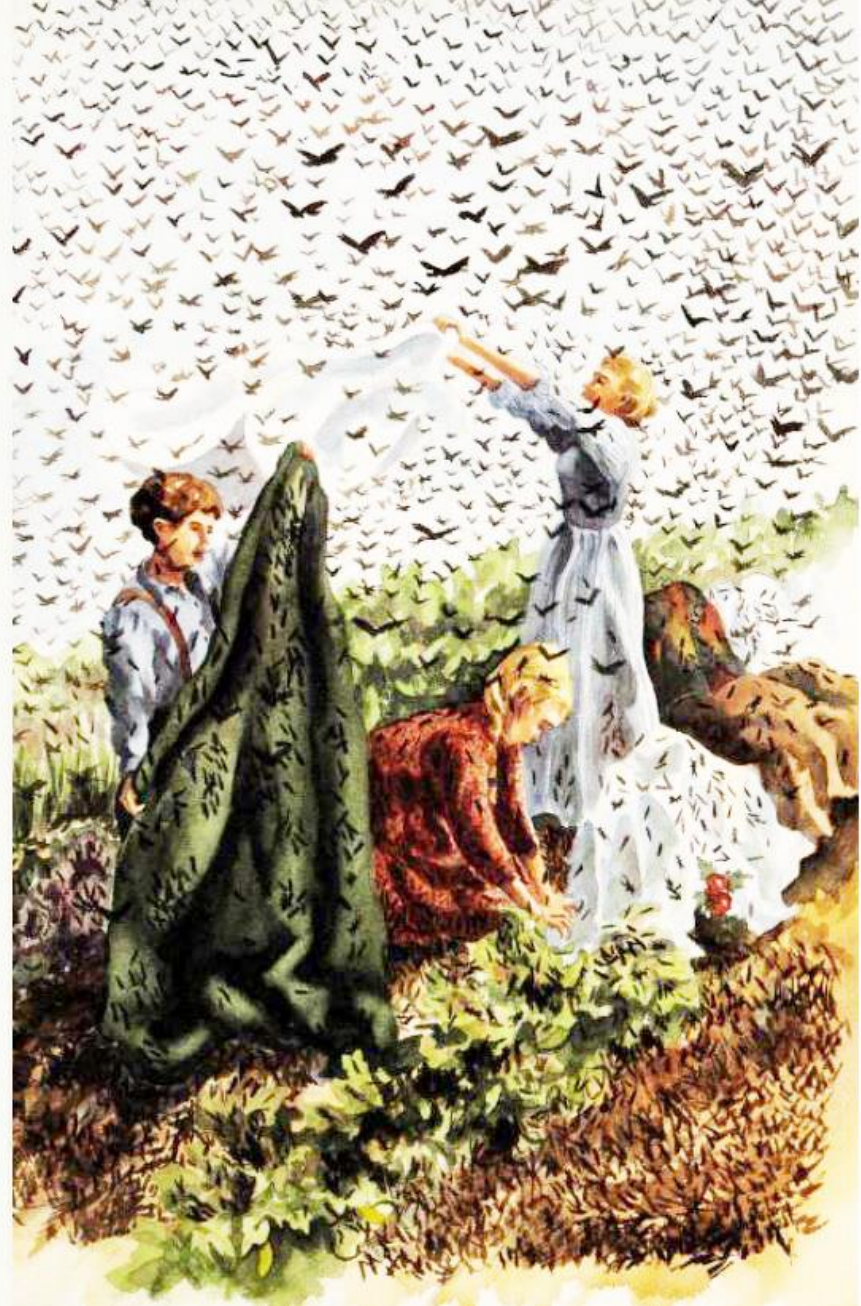
हेल्गा और उसकी माँ, दूसरे कमरे की ओर भागे.

जब उन्होंने अंदर कदम रखा, तो मिसेज़ लुंडस्ट्रॉम चिल्लाईं.

हेल्गा ने पूरे कमरे में देखा और हांफने लगी.

टिड्डियों ने एक कंबल जैसे, उसकी छोटी बहन एट्टा को, ढँक दिया था!

मिसेज़ लुंडस्ट्रॉम पालने के पास पहुंचीं, और उन्होंने रोती हुई बच्ची को उठाया, और टिड्डियों को झटककर हटाया.

"लालटेन को अपने पिता के पास लेकर जाओ," उन्होंने हेल्गा से कहा. "जल्दी!"

तभी कहीं से गोली चलने की आवाज आई.

मक्का के खेत में एक भूरा बादल छा गया.

हेल्गा ने अपने परिवार की वैगन देखी.

"वो पिताजी हैं," एरिक चिल्लाया. "वो टिड्डों को शूट कर रहे हैं."

मिस्टर लुंडस्ट्रॉम ने घोड़ों को अपने यार्ड में दौड़ाया.

"लालटेन लेकर आओ!" वो चिल्लाए.

हेल्गा बाहर अपने पिता के पास गई.

उसने पिता को एक खाई खोदते हुए पाया.

हेल्गा ने पिता को इतना गुस्सा पहले कभी नहीं देखा था.

"अपने भाई की मदद करो," पिता ने जोर से कहा.

"कुछ ऐसा लाओ जिसे हम जला सकें."

हेल्गा दौड़कर एरिक के पास गई और अपने हाथों को कठोर भूरी टिड्डियों के शरीरों पर रखा.

बच्चों ने मिलकर सूखी घास और टहनियों को खोजा.

वो काम आसान नहीं था.

टिड्डे उनकी बाहों और पीठ पर कूद रहे थे.

लेकिन आखिरकार एक घंटे बाद उन्होंने खाई को भर दिया था.

अब उनके पिता घास और टहनियों को आग लगा सकते थे और फावड़े से टिड्डियों को खाई में डाल सकते थे.

कुछ देर के लिए आग बहुत तेज़ जलती रही.

लेकिन टिड्डे सैकड़ों की संख्या में खाई में कूदते रहे.

कुछ ही देर में टिड्डों ने आग बुझा दी.

कुछ ही मिनटों में आग बुझ गई.

वो देख, सब लोग अवाक रह गए.

तब हेल्गा ने कहा, "टिड्डे आग से नहीं मरेंगे. अब हम क्या करें?"

"मुझे नहीं पता," उसके पिता ने कहा.

"लेकिन आज हम और कुछ नहीं कर सकते. बेहतर होगा कि हम घर में जाकर माँ की मदद करें."

जब बाकी वहां पहुंचे तब भी मिसेज़ लुंडस्ट्रॉम ने अपनी छोटी बच्ची को पकड़कर रखा था.

"टिड्डे हर जगह हैं," उन्होंने कराहते हुए कहा.

"फर्श पर, बिस्तरों में," मिस्टर लुंडस्ट्रॉम ने अपने फावड़े को फर्श पर ठेलकर टिड्डों का भार उठाया.

"आओ," उन्होंने हेल्गा और एरिक से कहा.

"झाड़ू और फावड़े ले लो. हम आखिरी टिड्डे को भी ढूंढेंगे और उन सभी को घर के बाहर निकालेंगे!"

आखिरी टिड्डे को बाहर निकालने के बाद उन्होंने दरवाजा और खिड़कियां बंद कर दीं.

फिर परिवार ने वो बचा-खुचा खाना खाया, जिस पर टिड्डों ने हमला नहीं किया था.

मिस्टर लुंडस्ट्रॉम ने परिवार को शहर की अपनी यात्रा के बारे में बताया.

"खबर यह है, कि टिड्डियों ने पूरे इलाके को अपने कब्जे में कर लिया है. उन्होंने अपने रास्ते में आई सब फसल को खा ली है."

मिस्टर लुंडस्ट्रॉम ने अपनी प्लेट एक तरफ रख दी.

"कोई नहीं जानता कि अब क्या करना है?"

उस रात कोई भी ज्यादा नहीं सोया.

हेल्गा घंटों जागती रही.

उसने टिड्डों के चले जाने के लिए प्रार्थना की.

लेकिन अगली सुबह, टिड्डे अभी भी वहीं थे.

और जब परिवार ने बाड़े की जाँच की, तो उन्हें टिड्डों के झुंड में लड़खड़ाती हुई मुर्गियाँ मिलीं.

"मूर्ख जानवर," मिस्टर लुंडस्ट्रॉम ने कहा.

"मुर्गियों ने आज जमकर टिड्डे खाए हैं."

"सभी ओर से बहुत भयानक बदबू आ रही है," एरिक ने कहा.

मिस्टर लुंडस्ट्रॉम ने कुएँ से एक बाल्टी पानी निकाला.

"अरे बाप रे!" हेल्गा चिल्लाई. "टिड्डे कुएं में भी हैं!"

"यहां तक कि उन्होंने हमारी पानी को भी नहीं बक्शा!" उसके पिता चिल्लाए.

"उन्होंने हमारे लिए कुछ नहीं छोड़ा!"

पिता ने हेल्गा और एरिक को एक-एक बाल्टी दी.

"मेरी मदद करो. हम नदी पर जाएंगे."

पर नदी पर भी चीजें बेहतर नहीं थीं.

"देखो उन्होंने क्या किया," हेल्गा ने कहा.

"पानी भूरा है, और वहां भी बदबू आ रही है! अब हम क्या पीएंगे?"

मिस्टर लुंडस्ट्रॉम ने सिर हिलाया.

"हम कुएं पर वापस जाएंगे. हो सकता है कि हम टिड्डों को साफ कर सकें और कुएं को ढक सकें ताकि और टिड्डे अंदर न जाएं. फिर जब बारिश आएगी, तो हम पानी को बाल्टियों में इकठ्ठा कर पाएंगे."

वे वापस कुएँ के पास गए और अपनी बाल्टियों से उन्होंने टिड्डों को और बदबूदार पानी को बाहर निकाला.

तब हेल्गा के पिता ने टिड्डों को पकड़ने का एक "पिंजड़ा" बनाया.

सबसे पहले, उसने धातु की एक लंबी शीट से एक उथला बर्तन बनाया.

फिर उन्होंने बर्तन के पीछे एक बड़ी जाली लगाई.

उन्होंने बर्तन के नीचे दो बोर्ड लगाए.

फिर उन्होंने "पिंजड़े" को घोड़े के पीछे फिट किया और एक बर्तन में मिट्टी का तेल भर दिया.

बच्चों ने घोड़े को खेतों में ले जाने में मदद की.

जब "पिंजड़ा" पास से गुजरा, तो ज़मीन से कूदते हुए टिड्डे जाली से टकराए.

फिर मिट्टी के तेल वाले बर्तन में गिरने से उनकी मौत हो गई.

लेकिन बहुत सारे टिड्डे थे.

लुंडस्ट्रॉम उनकी जमीन पर आए लाखों टिड्डों को कभी भी मार नहीं सकते थे.

उनकी एकमात्र आशा अब उन फसलों को खोजना थी, जिन्हें टिड्डों ने बक्श दिया था.

अगले छह सप्ताह तक, उन्होंने हर दिन खेतों में खोज की.

गनीमत है भाग्य ने उनका साथ दिया.

उन्हें अपने खाने के लिए पर्याप्त भोजन मिला.

लेकिन उन्हें बेचने के लिए पर्याप्त फसल नहीं मिली.

दिन बीतते गए.

जितने लंबे समय तक टिड्डे यहाँ रहेंगे, जीवन उतना ही कठिन होगा.

एक सुबह, हेल्गा की माँ ने खिड़की से बाहर देखा.

"बहुत से लोग हार मान ली है," उन्होंने कहा.

“देखो, एक वैगन में लोग, इस स्थान को छोड़कर जा रहे हैं."

"वे कहां जा रहे हैं?" हेल्गा ने पूछा.

"हो सकता है कि वे पूर्व में अपने रिश्तेदारों के पास जा रहे हों," उसकी माँ ने कहा.

"क्या हम भी जाएंगे?" हेल्गा ने पूछा.

"हम अपना घर और खेत कभी नहीं छोड़ेंगे," उसके पिता ने कहा.

"हमने इस भूमि पर बहुत लम्बे समय तक काम किया है."

फिर पिता ने अपने हाथ हवा में उठा दिए.

"अब यही हमारा घर है. हमारे पास पैसे नहीं हैं. अब हम स्वीडन वापस नहीं जा सकते."

दो सप्ताह बाद,

जब वे बर्बाद हुए खेतों में से गुज़र रहे थे, तब मिस्टर लुंडस्ट्रॉम ने अपने परिवार से कहा.

"टिड्डे चले गए हैं. लेकिन वे अपने अंडे मिट्टी में छोड़ गए हैं."

"टिड्डों के अंडे मिनेसोटा की भयानक सर्दी में ज़िंदा नहीं बचेंगे," उनकी पत्नी ने कहा.

"क्या पता," मिस्टर लुंडस्ट्रॉम ने कहा. "अगले वसंत में हालात और भी खराब हो सकते हैं."

हेल्गा की माँ ने छोटे बच्चे को हिलाया.

"हम कैसे जिंदा रहेंगे?" उन्होंने पूछा.

"हमने दस एकड़ गेहूं, पांच सौ गोभी, और सभी खीरे और चुकंदर खो दिए हैं."

फिर मिस्टर लुंडस्ट्रॉम ने अपनी पत्नी के हाथ को पकड़ा.

"मुझे केवल एक ही काम करना है. मुझे कहीं जाकर काम ढूंढ़ना चाहिए."

"धत्तेरे की!" हेल्गा की माँ चिल्लाईं.

"आप हमें यहाँ अकेला नहीं छोड़ सकते हैं."

"मुझे वो करना ही होगा," हेल्गा के पिता ने कहा.

"मुझे देश के उत्तर में एक अच्छी नौकरी मिल सकती है.

स्टिलवॉटर के लकड़ी-कैंप को लोगों की जरूरत है."

"क्या हम आपके साथ नहीं जा सकते?" हेल्गा ने पूछा.

"नहीं, तुम सभी को यहाँ पर ही रहना चाहिए," उन्होंने कहा.

"अगर हम सब चले गए तो हम अपनी जमीन खो देंगे.
और यह देखना आपका काम है कि जानवर सर्दियों में ज़िंदा रहें."

"कम-से-कम हमारे पास कुछ समय के लिए खाने के लिए पर्याप्त भोजन है," मिस्टर लुंडस्ट्रॉम ने कहा.

"कुछ जई, मक्का, आलू और टमाटर."

मिसेज़ लुंडस्ट्रॉम ने हेल्गा को बच्चा थमा दिया.

"लेकिन हमारे पास पैसे नहीं हैं," उन्होंने कहा.

"हमें बेचने के लिए गेहूं की फसल की जरूरत है. हमें जानवरों के लिए चारा और अगले साल की फसल के लिए बीज खरीदने के लिए भी पैसों की जरूरत है. हमें कपड़े खरीदने की जरूरत है. मैंने जितना हो सका, अपने कपड़ों में पैबंद लगाए हैं."

अगले चार हफ्तों तक, हेल्गा के पिता ने शिकार में अपना समय बिताया.

और माँ मांस को नमक और धुंआ दिखाने में व्यस्त रहीं.

फिर वो दिन आया जब मिस्टर लुंडस्ट्रॉम को जाना पड़ा.

सभी दुखी थे और डरे हुए थे.

लेकिन वो आंसुओं का समय नहीं था.

"हमें सर्दियों की तैयारी करनी चाहिए," मिसेज़ लुंडस्ट्रॉम ने अपने बच्चों से कहा.

"तुम दोनों ठेला लो और जलाऊ लकड़ी लेकर आओ और साथ में गाय का गोबर भी इकठ्ठा करके लाओ. हम उन सबको बोरों को भरकर घर के एक कोने में रख देंगे."

हेल्गा जानती थी कि उसे क्या करना है.

"चलो नदी के पास जाते हैं," उसने एरिक से कहा.

"नदी में हमेशा हमें बहकर आने वाली लकड़ी मिलेगी."

चलते-चलते उन्होंने गाय के गोबर की तलाश की - और उन्होंने मवेशियों के झुंडों द्वारा छोड़े गए सूखे गोबर को इकठ्ठा किया.

"देखो," एरिक ने कहा, जब वे नदी के पास पहुंचे.

"टिड्डे चले गए हैं, और पानी साफ है. अब हम फिर से नदी में मछली पकड़ने जा सकते हैं."

हेल्गा मुस्कुराई.

मछली खाने के विचार ने फिर से उसकी आत्मा को जगा दिया.

"शायद चीजें बेहतर हो जाएं."

अगले कुछ हफ्ते धीरे-धीरे बीत गए.

जब मौसम अच्छा होता तब हेल्गा और एरिक एक मील चलकर मिसेज़ हेल्स के स्कूल जाते थे.

लेकिन जल्द ही सर्दी आ गई. हेल्गा को सर्दियों की रातों से डर लगता था.

अँधेरे में हेल्गा को अपने पिता की चिंता सताने लगती थी.

लम्बर-कैंप एक खतरनाक जगह होगी, उसने सोचा.

वहाँ उसके पिता गिरते पेड़ से कुचले जा सकते थे.

उसे चिंता थी कि कहीं वो वहां मर न जाएँ, और फिर वे अकेले जंगल में फंस जाएँगे.

दो महीने बाद जनवरी में, मैदानी इलाकों में बर्फीली आंधी चली.

पहले तो छत पर ओले गिरे.

उसने हेल्गा को उस दिन की याद दिलाई जब टिड्डे आसमान से गिरे थे.

उस दिन परिवार एक-साथ, पलंग में दुबक गया.

काश हम पिता के साथ होते, हेल्गा ने सोचा.

मैं उसके बिना यहाँ पर थक गई हूँ.

मैं भीषण ठंड से थक गई हूँ.

मैं मक्का का दलिया खाते-खाते थक गई हूँ.

तभी हवा गरज उठी.

पूरी रात बर्फ़ीला तूफ़ान चलता रहा.

अगली सुबह, मिसेज़ लुंडस्ट्रॉम ने हेल्गा को जगाया.

"आओ, हेल्गा. तूफान ख़त्म हो गया है. हमें खलिहान में जाकर देखना चाहिए."

फिर एरिक छोटे बच्चे के साथ रहा. हेल्गा अपनी मां के साथ खलिहान में गई.

फिर वे जानवरों के कुंड में बर्फ को पिघलाने के लिए गर्म पानी की केतली लेकर गए.

ठंड थी - बाहर बहुत अधिक ठंड थी.

लेकिन हेल्गा को अपने पिता की बात याद आई.

"तुम्हारा काम यह देखना है कि जानवर सर्दियों में ज़िंदा रहें."

सर्दी अंतहीन लग रही थी.

लेकिन आखिरकार, तीन महीने बाद हेल्गा के पिता घर लौट आए.

यह टिड्डों के अंडों के फूटने का समय था.

हर कोई इंतजार कर रहा था और उनके मन में डर भी था.

वो उम्मीद कर रहे थे कि टिड्डे उनकी फसलों को बक्श देंगे.

लेकिन हफ्तों तक, कीट खेतों में टिड्डों के अंडों की दावत खाते रहे.

फिर जुलाई में, युवा टिड्डों ने पंख खोले.

इस बार, लुंडस्ट्रॉम भाग्यशाली रहे.

इस बार टिड्डों ने उनके खेतों में अंडे नहीं दिए.

एक दिन, हेल्गा और एरिक नदी में थे.

"देखो," हेल्गा ने आकाश की ओर इशारा करते हुए कहा.

उनके ऊपर आसमान में छोटे-छोटे काले बवंडर घूम रहे थे.

आसमान, बादलों से घना हो गया.

फिर धूप निकली.

टिड्डे उड़कर जा रहे थे.

वे जिस रास्ते से आए थे वे उसी रास्ते वापिस चले गए.

लेखक का नोट

यह काल्पनिक कहानी मिनेसोटा के दक्षिण-पश्चिमी प्रेयरी क्षेत्र की है. 1873 और 1877 के बीच, लाखों रॉकी माउंटेन टिड्डियों (टिड्डों) ने कनाडा और मध्य-पश्चिमी और मैदानी राज्यों पर, मोंटाना से टेक्सास तक आक्रमण किया. सबसे कठिन मार मिनेसोटा, डकोटा, कंसास, नेब्रास्का, आयोवा और मिसौरी के हिस्सों पर पड़ी.

कुछ किसानों ने कई वर्षों तक अपनी फसलें खो दीं. दूसरों को केवल एक बार ही थोड़ा नुकसान, या कुछ गंभीर क्षति का अनुभव हुआ.

मैदानी राज्यों के लोग एक दृढ़ निश्चयी समूह थे. कुछ मूल रूप से दक्षिण और न्यू इंग्लैंड के थे. कुछ स्वीडन, नॉर्वे और जर्मनी से थे. टिड्डों की विपत्तियों के दौरान, कुछ सेटलर्स की, उनके पूर्व में बसे रिश्तेदारों ने मदद की, जिन्होंने उन्हें पैसे और कपड़े भेजे. लेकिन कई किसानों के पास उनकी मदद करने के लिए रिश्तेदार नहीं थे. इन लोगों की कड़ी मेहनत और साहस ने ही उन्हें इस कठिन समय से बाहर निकाला.

इन किसानों को देश के बाकी हिस्सों से बहुत कम मदद मिली. सरकार ने किसानों को कम मात्रा में नकद और बीज दिया. लेकिन वो मदद बहुत कम थी. बीज केवल कुछ एकड़ फसल लगाने के लिए पर्याप्त थे.

अपने जानवरों को बेचने से भी उन्हें कोई फायदा नहीं होता. किसानों को नई फसल बोने और अपने परिवार की देखभाल करने के लिए अपनी गायों और घोड़ों की जरूरत थी.

टिड्डों के हमलों के बिना भी, प्रेयरी का जीवन कठिन था. वहां पेड़ बहुत कम थे. इसलिए, घरों को अक्सर मिट्टी और घास, के ब्लॉक से बनी ईंटों से बनाया जाता था. जहां उपलब्ध होता वहां धूप में सुखाई गए गाय और भैंस के गोबर का इस्तेमाल, ईंधन के रूप में किया जाता था. प्रेयरी के जीवन का मतलब जंगली जानवरों, सांपों, बवंडर, आग, सूखा, ओलावृष्टि और बर्फानी तूफान से निपटना भी था.

1930 के दशक में टिड्डियों की विपत्तियों की एक और श्रृंखला आई. पर अब अमेरिका में टिड्डियों द्वारा विनाश में गिरावट आई है. लेकिन टिड्डे अभी भी किसानों और पशुपालकों के लिए एक गंभीर समस्या बने हैं. बहुत से लोगों ने इस कीट को नियंत्रित करने के तरीकों का अध्ययन करना जारी रखा है.